Madan Mohan Malaviya University Of Technology, Gorakhpur.

Department ofv Humanities and Management Science

Webinar On " Human Rights and Higher Education".

Date; 16/12/2020 From 3:00 PM to 5:00PM

उच्च शिक्षा ही मानवाधिकार का आधार : न्यायमूर्ति रवि त्रिपाठी

गोरखपुर (एसएनबी)। मानविकी एवं प्रबंध विज्ञान विभाग, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय एवं भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार सप्ताह के समापन के अवसर पर बुधवार को मानव अधिकार एवं उच्च शिक्षा विषय पर एक वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

वेबिनार के मुख्य अतिथि गुजरात राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति रवि आर त्रिपाठी व विशिष्ट वक्ताओं के रूप में भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष श्रीराम शन गोस्वामी व दीन दयाल उपाध्याय ग्राम्य विकास संस्थान, लखनऊ के महानिदेशक एल वेंकटेश्वर लू रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एमएमएमयूटी के कुलपति प्रो. जेपी पांडेय ने की।

> मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय व भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली का मानव अधिकार एवं उच्च शिक्षा विषय पर वेब संगोष्ठी

अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति त्रिपाठी ने कहा कि एक मनुष्य के अधिकारों का हनन एक दूसरा मनुष्य ही करता है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि मानवाधिकारों का हनन किसी मशीन अथवा अन्य प्राणी ने किया हो। उन्होंने कहा कि अगर किसी देश में शांति और सुरक्षा नहीं है तो वहां मानवाधिकारों की रक्षा संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा ही राष्ट्रीय सुरक्षा, महिला सुरक्षा, और मानवाधिकार का आधार है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि गुरु गोरक्षनाथ की तपोभूमि और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कर्मभूमि पर स्थापित एमएमएमयूटी ने इन बातों को विमर्श का केंद्र बनाया है। उन्होंने श्रीमद्भगवत गीता में निहित मानवाधिकार संबंधी तत्वों की भी चर्चा की। विशिष्ट वक्ता श्रीराम शन गोस्वामी ने मानवाधिकार के विकास के लिए उच्च शिक्षा को सर्वोच्च माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि समाज में उत्पन्न हो रही सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का माध्यम उच्च शिक्षा ही है। मानवाधिकार के हनन से मुक्ति दिलाने में उच्च शिक्षा ही प्रमुख अंग है। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भगवत गीता भारत को महान राष्ट्र बनाने का आधार है।

एमएमएमटीयू में आयोजित वेबीनार में संबोधित करते वक्ता। फोटो : एसएनबी।

विशिष्ट वक्ता एल वैंकटेश्वर लू ने श्रीमद्भगवद्गीता के विभिन्न श्लोकों की विस्तार से व्याख्या करते हुए मन, विचार, और कर्म अंतर्संबंधों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि मानवाधिकार तभी सुरक्षित रहेंगे जब शांति रहेगी। शांति तभी रहेगी जब मनुष्य का मैं शांत रहेगा, और मनुष्य का मन तब ही शांत रहेगा जब वह काम, क्रोध, लोभ, और मोह जैसे दुष्प्रवृत्तियों से दूर रहेगा। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल इंजीनियर, डाक्टर, अध्यापक बनाना नहीं है, बल्कि मनुष्य और उसके चरित्र का निर्माण करना भी है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र और धर्म का निर्माण मानव अधिकार और उच्च शिक्षा से ही उत्पन्न हो सकता है, इतिहासकारों और ऋषिमुनियों ने बताया है कि शिक्षा ही जीवन का आधार है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. जेपी पाण्डेय ने कहा कि हमारे अधिकारों की सीमा वहां समाप्त होती है जहां दूसरे लोगों के अधिकार शुरू होते है। हमे उच्च शिक्षा के माध्यम से इस भावना का विकास करना होगा। दुर्भाग्यवश शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इस भावना का विकास नहीं हो रहा है। उन्होंने उत्तर प्रदेश प्राविधिक विवि में बतौर परीक्षा नियंत्रक अपने दायित्वों की चर्चा करते हुए बताया कि वर्ष 2005 में यूपीटीयू ने प्रोफेशनल कोर्स के छात्रों में पेशेवर नैतिकता की भावना विकसित करने और उन्हें बेहतर मनुष्य बनाने के उद्देश्य से मानव मूल्यों संबंधी पाठ्यक्रम आरंभ किया था। एमएमएमयूटी का सदैव प्रयास रहेगा कि हम एक बेहतर इंजीनियर के साथ साथ बेहतर नागरिक भी बनाएं और उच्च व व्यावसायिक शिक्षा को और मनुष्य उन्मुख बनाएं।इसके पूर्व, मानविकी एवं प्रबंध विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. सुधीर नारायण सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. जीउत सिंह ने सभी वक्ताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. अभिजित मिश्र ने किया। कार्यक्रम में डा. रवि कुमार गुप्ता, डा. प्रियंका राय एवं डा. कहकशाँ खान सहित 97 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

शांति और सुरक्षा से ही मानवाधिकारों की रक्षा संभव : न्यायमूर्ति त्रिपाठी

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। गुजरात राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति रवि आर त्रिपाठी ने कहा कि किसी देश में शांति और सुरक्षा नहीं है तो वहां मानवाधिकारों की रक्षा संभव नहीं है। उच्च शिक्षा ही राष्ट्रीय सुरक्षा, महिला सुरक्षा, और मानवाधिकार का आधार है।

ये बातें, न्यायमूर्ति ने बुधवार को मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मानविकी एवं प्रबंध विज्ञान विभाग एवं भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली की ओर से अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार सप्ताह के समापन के अवसर कही। 'मानव अधिकार एवं उच्च शिक्षा' विषय पर वेब संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति ने कहा कि एक मनुष्य के अधिकारों का हनन दूसरा मनुष्य ही करता है। ऐसा कभी नहीं हुआ है कि मानवाधिकारों का हनन किसी मशीन अथवा अन्य प्राणी ने किया हो। उन्होंने श्रीमद्भगवत गीता में निहित मानवाधिकार संबंधी तत्वों की भी चर्चा की।

विशिष्ट वक्ता भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान, दिल्ली के संस्थापक अध्यक्ष रामकृष्ण गोस्वामी ने मानवाधिकार के विकास के लिए उच्च शिक्षा को सर्वोच्च माध्यम बताया। कहा कि श्रीमद्भगवत गीता भारत को महान राष्ट्र बनाने का आधार है।

एमएमएमयूटी में संगोष्ठी

मानवाधिकार के विकास के लिए उच्च शिक्षा सर्वोच्च माध्यम : रामकृष्ण गोस्वामी

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के चरित्र का निर्माण भी

विशिष्ट वक्ता दीनदयाल उपाध्याय ग्राम्य विकास संस्थान, लखनऊ के महानिदेशक एल वैंकटेश्वर लू ने श्रीमद्भगवत गीता के विभिन्न श्लोकों की विस्तार से व्याख्या करते हुए मन, विचार, और कर्म अंतर्संबंधों की चर्चा की। कहा कि उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल इंजीनियर, डाक्टर, अध्यापक बनाना नहीं है, बल्कि मनुष्य और उसके चरित्र का निर्माण करना भी है। आजकल की शिक्षा व्यवस्था बच्चों को डाक्टर, इंजीनियर तो बना रही पर अच्छा मनुष्य बनाने में विफल है। अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. जेपी पांडेय ने कहा कि हमारे अधिकारों की सीमा वहां समाप्त होती है जहां दूसरे लोगों के अधिकार शुरू होते हैं। मानविकी एवं प्रबंध विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुधीर नारायण सिंह ने अतिथियों का स्वागत तथा कुलसचिव प्रो. जीउत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ. अभिजीत मिश्र ने किया। कार्यक्रम में डॉ. रवि कुमार गुप्ता, डॉ. प्रियंका राय व डॉ. कहकशां खान समेत 97 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।